Toppersnotes®
Unleash the topper in you

उत्तर प्रदेश पुलिस

कांस्टेबल

UTTAR PRADESH POLICE RECRUITMENT & PROMOTION BOARD

भाग – 3

सामान्य हिन्दी एवं सामान्य विज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

UTTAR PRADESH CONSTABLE

CONTENTS

हिन्दी

1.	हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएँ	1
2.	वर्ण विचार	6
3.	संधि	10
4.	समास	26
5.	संज्ञा	32
6.	सर्वनाम	34
7.	लिंग	35
8.	वचन	40
9.	कारक	41
10.	तत्सम्–तद्भव	45
11.	विशेषण	47
12.	क्रिया	48
13.	काल	56
14.	अव्यय	58
15.	विराम चिह्न	62
16.	उपसर्ग	66
17.	प्रत्यय	69
18.	रस	73
19.	छंद	75

20.	अंलकार	83
21.	वर्तनी एवं वाक्य शुद्धि	88
22.	विलोम शब्द	102
23.	पर्यायवाची	110
24.	अनेकार्थक शब्द	113
25.	वाक्य के लिए एक शब्द	116
26.	शब्द युग्म	122
27.	एकार्थी शब्द	133
28.	मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ	140
29.	प्रसिद्ध कवि, लेखक एवं उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ	151
30.	हिन्दी भाषा में पुरस्कार	159
31.	अपठित गंघाश	164

❖ दैनिक विज्ञान : महत्वपूर्ण तथ्य 173

समास

- **समास शब्द का अर्थ** – संक्षिप्त या छोटा करना है।
- दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।
- इस मेल में विभक्ति चिह्नों का लोप होता है।
- समास शब्द 'सम् + आस' के योग से बना है।
  यहाँ 'सम्' का अर्थ – समीप
  एवं 'आस' का अर्थ – बैठना
  अर्थात् दो या दो से अधिक पदों का पास–पास आकर बैठ जाना या आपस में मिल जाना ही समास कहलाता है।
  जैसे – गौ के लिए शाला – गौशाला
- इस प्रकार दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से विभक्ति चिह्नों के कारण जो नवीन शब्द बनते हैं उन्हें सामासिक या समस्त पद कहते हैं।
- सामासिक शब्दों का संबंध व्यक्त करने वाले विभक्ति चिह्नों आदि के साथ प्रकट करने या लिखने वाली रीति को 'विग्रह' कहते हैं।
  जैसे – 'धनसंपन्न' समस्त पद का विग्रह 'धन से संपन्न'
  'रसोईघर' समस्त पद का विग्रह 'रसोई के लिए घर'
- समस्त पद में मुख्यतः दो पद होते हैं – पूर्वपद व उत्तरपद।
  पहले वाले पद को 'पूर्वपद' व दूसरे पद को 'उत्तरपद' कहते हैं।

समस्त पद	पूर्वपद	उत्तरपद	समास विग्रह
पूजा घर	पूजा	घर	पूजा के लिए घर
माता–पिता	माता	पिता	माता और पिता
नवरत्न	नव	रत्न	नौ रत्नों का समूह
हस्तगत	हस्त	गत	हस्त में गया हुआ
रसोई घर	रसोई	घर	रसोई के लिए घर

समस्त पद एवं समास विग्रह – दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में जोड़ देना ही समस्त पद या समास होता है व आपस में जुड़े हुए शब्दों को तोड़ना या अलग करना समास विग्रह कहलाता है।
समास विग्रह करते समय 'मूल' शब्द का ही प्रयोग होता है।

नोट –
पर्यायवाची शब्द को समास विग्रह में उपयोग मे नहीं लिया जाता है।

क्र.सं.	समास या समस्त पद	समास विग्रह
1.	यथा समय	समय के अनुसार
2.	बेखबर	बिना खबर के
3.	ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
4.	यशप्राप्त	यश को प्राप्त

समास के भेद – एक समास में कम से कम दो पदों का योग अवश्य होता है।
समास के उन दो पदों में से किसी एक पद का अर्थ प्रमुख होता है। अर्थ की इसी प्रधानता के अनुसार समास के प्रमुखतः चार भेद होते हैं।

उनकी प्रधानता अथवा अप्रधानता के विभागत्व के अनुसार ये भेद किए गए हैं।

1. जिस समास में पहला शब्द प्रायः प्रधान होता है, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं।
2. जिस समास में दूसरा शब्द प्रधान होता है, उसे 'तत्पुरुष' समास कहते हैं।
3. जिस समास में दोनो शब्द प्रधान होते हैं, उसे द्वंद्व समास कहते हैं।
4. जिस समास में कोई भी शब्द प्रधान नहीं होता है उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

समास के प्रमुख भेद इस प्रकार है–
1. पहला पद प्रधान – अव्ययीभावी समास
2. दूसरा पद प्रधान – तत्पुरुष समास

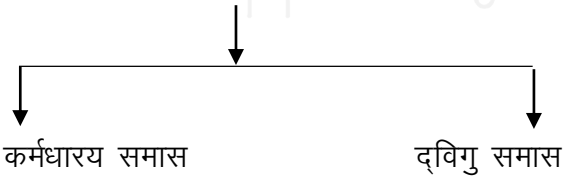

नोट –
कर्मधारय व द्विगु समास दोनों में द्वितीय पद ही प्रधान होता है।
अतः इन दोनों समासों को मुख्य भेदों में शामिल न कर इन दोनों को तत्पुरुष समास के उपभेदों में शामिल किये जाते हैं।
3. दोनों पद प्रधान – द्वंद्व समास
4. अन्य पद प्रधान – बहुव्रीहि समास

1. **अव्ययीभाव समास** – इस समास में परिवर्तनशीलता का भाव होता है और उस अव्यय पद का का रूप, लिंग, वचन, कारक में नहीं बदलता है व सदैव एकसा रहता है व पहला पद प्रधान होता है। इस समास में प्रथम पद कोई उपसर्ग या

अव्यय शब्द होता है व इस समास में एक पद का भी प्रायः दोहराव होता रहता है लेकिन ज्ञात रहे यदि दोहराव वाले पद में युद्धवाचक अर्थ (योद्धा) प्रकट हो रहा हो तो वहाँ पर बहुव्रीहि समास माना जाता है।

उदाहरण

समस्त	पद	विग्रह
1.	बेखबर	बिना खबर के
2.	प्रतिदिन	हर दिन
3.	भरपेट	पेट भरकर
4.	आजन्म	जन्म से लेकर
5.	आमरण	मरणतक
6.	यथासमय	समय के अनुसार
7.	प्रत्याशा	आशा के बदले आशा
8.	प्रतिक्षण	हर क्षण
9.	बेवजह	वजह से रहित

अपवाद – हिंदी के कई ऐसे शब्द या समस्त पद जिनमें कोई शब्द अव्यय नहीं होता है परन्तु समस्त पद अव्यय की तरह प्रयुक्त होता है वहाँ भी अव्ययीभाव समास माना जाता है–

जैसे –

घर – घर	घर के बाद घर
रातों रात	रात ही रात में

अव्ययीभाव समास के प्रमुख नियम

आ/यावत, यथा, प्रति, बा/स, बे/ला/निस्/निर्/नि आदि उपसर्ग होने पर–

1. ''मूल शब्द + तक''
   जैसे – आजीवन – जीवन रहने तक
2. ''मूल शब्द + के अनुसार''
   जैसे – यथायोग्य – योग्यता के अनुसार
3. ''हर + मूल शब्द''
   जैसे – प्रतिपल – हर पल
4. ''मूल शब्द + के सहित''
   जैसे – सशर्त – शर्त के सहित
5. ''मूल शब्द + से रहित''
   जैसे –

बेशर्म	शर्म से रहित
अकारण	बिना कारण के
अनजाने	बिना जानकर
यथास्थिति	जैसी स्थिति है
यथामति	जैसी मति है
यथा विधि	जैसी विधि निर्धारित है
नगण्य	न गण्य

2. तत्पुरुष समास – इस समास में पहला पद गौण व दूसरा पद प्रधान होता है।
इस समास में कारक के विभक्ति चिह्नों का लोप हो जाता है (कर्ता व संबोधन कारक को छोड़कर) इसलिए छह कारकों के आधार पर इस समास के 6 भेद हैं–

(i) कर्म तत्पुरुष समास – इस समास में 'को' विभक्ति चिह्नों का लोप रहता है।

जैसे

ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
आपत्तिजनक	आपत्ति को जन्म देने वाला
आत्मविस्मृत	आत्म को विस्मृत
सर्वप्रिय	सर्व को प्रिय
यशप्राप्त	यश को प्राप्त
पदप्राप्त	पद को प्राप्त
आदर्शोन्मुख	आदर्श को उन्मुख
शरणागत	शरण को आया हुआ
ख्यातिप्राप्त	ख्याति को प्राप्त
क्रमागत	क्रम को आगत

(ii) करण तत्पुरुष समास – इस समास में समास विग्रह करने पर 'से' चिह्न का लोप होता है व 'के द्वारा' का भी लोप होता है।

जैसे

भावपूर्ण	भाव से पूर्ण
बाणाहत	बाण से आहत
अभावग्रस्त	अभाव से ग्रस्त
हस्तलिखित	हस्त से लिखित
बाढ़ पीड़ित	बाढ से पीड़ित
गुणयुक्त	गुण से युक्त
चिंताव्याकुल	चिंता से व्याकुल
ईश्वरदत्त	ईश्वर द्वारा दत्त
आँखों देखी	आँखों द्वारा देखी हुई

(iii) संप्रदान तत्पुरुष समास – इस समास में 'के लिए' चिह्न का लोप होता है।

जैसे –

गुरुदक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा
राहखर्च	राह के लिए खर्च
बालामृत	बालकों के लिए अमृत
युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि
कर्णफूल	कर्ण के लिए फूल
विद्यालय	विद्या के लिए आलय
धुड़साल	घोड़ो के लिए साल
महँगाई – भत्ता	महँगाई के लिए भत्ता
छात्रावास	छात्राओं के लिए आवास
सभाभवन	सभा के लिए भवन
रोकड़बही	रोकड़ के लिए बही
हवन कुण्ड	हवन के लिए कुण्ड

हवन सामग्री	हवन के लिए सामग्री
विद्युत्गृह	विद्युत् के लिए गृह
समाचार पत्र	समाचार के लिए पत्र

(iv) अपादान तत्पुरुष समास – इस समास में 'से' पृथक या अलग के लिए चिह्न का लोप होता है।

जैसे –

अवसरवंचित	अवसर से वंचित
देशनिकाला	देश से निकाला
बंधनमुक्त	बंधन से मुक्त
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
कामचोर	काम से जी चुराने वाला
कर्त्तव्य विमुख	कर्त्तव्य से विमुख
जन्मांध	जन्म से अंधा
गुणातीत	गुणों से अतीत
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त
आशातीत	आशा से अतीत
गुणरहित	गुण से रहित
गर्वशून्य	गर्व से शून्य
जन्मरोगी	जन्म से रोगी
जातबाहर	जाति से बाहर
जलरिक्त	जल से रिक्त

(v) संबंध तत्पुरुष समास – यह समास का, के, की लोप से बनने वाला समास है।

जैसे –

गंगाजल	गंगा का जल
नगरसेठ	नगर का सेठ
आत्महत्या	आत्म की हत्या
कार्यकर्ता	कार्य कर कर्ता
गोमुख	गो का मुख
मतदाता	मत का दाता
राजमाता	राजा की माता
जलधारा	जल की धारा
पथपरिवहन	पथ का परिवहन
भूकंप	भू का कंप
मंत्रिपरिषद्	मंत्रियों की परिषद्
मृत्युदंड	मृत्यु का दंड
रक्तदान	रक्त का दान
विद्यार्थी	विद्या का अर्थी
शांतिदूत	शांति का दूत

(vi) अधिकरण तत्पुरुष समास – इस समास में 'में' 'पर' चिह्नों का लोप होता है।

जैसे –

जलमग्न	जल में मग्न
कर्मनिष्ठ	कर्म में निष्ठ
आपबीती	आप पर बीती
घुड़सवार	घोड़े पर सवार
सिरदर्द	सिर में दर्द
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश
ग्रामवासी	ग्राम मे वास करने वाला
जलयान	जल पर चलने वाला यान
जलपोत	जल पर चलने वाला पोत
गंगास्नान	गंगा में स्नान
कार्य कुशल	कार्य में कुशल
कलानिपुण	कला में निपुण
आत्मविश्वास	आत्म पर विश्वास
ईश्वराधीन	ईश्वर पर अधीन
अश्वारूढ	अश्व पर आरूढ

नञ् तत्पुरूष समास – यदि किसी सामासिक पद में प्रथम पद के रूप में अ/अन/अन् /न/ना उपसर्ग जुड़ा हुआ हो तथा यह उपसर्ग मूल शब्द को विलोम शब्द के रूप में परिवर्तित कर रहे हो तो वहाँ पर नञ् तत्पुरुष समास कहते हैं।

इस समाज का विग्रह करते समय उपसर्ग को हटाकर 'न' शब्द जोड़ दिया जाता है।

जैसे –

अज्ञान	न ज्ञान
अनन्त	न अन्त
नालायक	न लायक
अनमोल	न मोल

3. द्विगु समास – इस समास का पहला पद संख्यावाचक अर्थाव् गणना बोधक होता है व दूसरा पद प्रधान होता है, क्योंकि इसमें बहुदा यह जाना जाता है कि इतनी वस्तुओं का समूह है।

इस समास के पदों का विग्रह करते समय दोनो पदों को लिखकर अन्त में का समूह/समाहार पद जोड़ दिया जाता हैं।

समस्त पद	**विग्रह**
1. नवरत्न	नौ रत्नो का समूह
2. अठवाड़ा	आठ दिनों का समूह
3. द्विगु	दो गौओ का समूह
4. शताब्दी	सौ अब्दों (वर्षो) का समूह
5. त्रिभुज	तीन भुजाओ का समूह
6. चौराहा	चार राहों का संगम
7. पंचरात्र	पंच रात्रियों का समूह
8. त्रिमूर्ति	तीन मूर्तियों का समूह
9. तिकोना	तीन कोनों का समूह
10. सिपाही	सि (तीन) पैरों का समूह

11. एकतरफ	एक ही तरफ है जो
12. अष्टधातु	आठ धातुओं का समूह
13. त्रिलोकी	तीन लोकों का समूह
14. शतक	सौ का समूह
15. चौबारा	चार द्वार वाला भवन

अपवाद –

पक्षद्वय	दो पक्षो का समूह
लेखकद्वय	दो लेखकों का समूह
संकलनत्रय	तीन संकलनो का समूह

4. कर्मधारय समास – इस समास के पहले व दूसरे पद में विशेषण विशेष्य अथवा उपमान उपमेय का संबंध होता है।

इस समास में द्वितीय पद प्रधान होता है।

इस समास को समानाधिकरण तत्पुरुष कहते है।

समस्त पद	विग्रह
(i) विशेषण विशेष्य	
महापुरुष	महान् है जो पुरुष
पीतांबर	पीला है जो अंबर
प्राणप्रिय	प्रिय है जो प्राणों को
नीलगगन	नीला है जो गगन
नीलकमल	नीला है जो कमल
महात्मा	महान् है जो आत्मा
श्वेतवस्त्र	श्वेत है जो वस्त्र
नीलोत्पल (कमल)	नीला है जो उत्पल

(ii) उपमान– उपमेय	**विग्रह युक्त पद**
चंद्रवदन	चंद्रमा के समान वदन
भवसागर	भवरूपी सागर
विद्याधन	विद्यारूपी धन
मृगनयनी	मृग के समान नेत्र वाली
पादार विन्द	अरविन्द के समान हैं जो पाद
चंद्रमुख मुख	चंद्र के समान है जो

(iii) रूपक आलांकारिक	**पद विग्रह युक्त**
मनमंदिर	मनरूपी मंदिर
ताराघट	तारारूपी घट
शोकसागर	सागर रूपी शोक

(iv) सु/कु उपसर्ग से बने	**पद विग्रह**
सुपुत्र	सुष्ठु है जो पुत्र
सुमार्ग	सुष्ठु है जो मार्ग
कुमति	कुत्सित है जो मति
कुपुत्र	कुत्सित है जो पुत्र

5. द्वन्द्व समास – इस समास में दोनों पद समान रूप से प्रधान होते हैं।

इसके दोनों पद योजक – चिह्न द्वारा जुड़े होते हैं व समास विग्रह करने पर 'और', 'या' 'अथवा' तथा 'एवं' आदि लगते हैं।

इस समास के मुख्यतः तीन भेद होते है–

द्वन्द्व समास

इतरेतर द्वन्द्व समास | समाहार द्वन्द्व समास | एकशेष द्वन्द्व समास

(i) इतरेतर द्वन्द्व समास – इस समास में दो शब्दों का अर्थ होता है व दोनों पद प्रधान होते हैं, साथ में दोनों शब्दों का अर्थ भी अलग–अलग होता है।

अन्न–जल	अन्न और जल
आयात – निर्यात	आयात और निर्यात
दम्पती	दम् (पत्नी) और पति
दूध–रोटी	दूध और रोटी
देश– विदेश	देश और विदेश
दाल–रोटी	दाल और रोटी

(ii) समाहार द्वन्द्व समास – इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं व दोनों शब्दों का अर्थ दो या दो से अधिक होता है।

आगा – पीछा	आगा, पीछा आदि
कंकर – पत्थर	कंकर, पत्थर आदि
रोक – टोक	रोक, टोक आदि
चाय – पानी	चाय, पानी आदि
खाना – पीना	खाना, पीना आदि
चलता – फिरता	चलता, फिरता,
धल – दौलत	धन, दौलत आदि

नोट – एक से 10 तक की संख्याओ का छोड़कर व 10 से भाज्य संख्या को छोड़कर अन्य सभी संख्यावाची शब्दों में समाहार द्वन्द्व समास होगा।

सैंतीस	सात और तीस का समाहार
चौबीस	चार और बीस का समाहार
तिरासी	तीन और अस्सी का समाहार

(iii) एकशेष द्वन्द्व समास – इस समास में विग्रह करने पर तो कई पद होते हैं, परन्तु समस्त पद बनाते समय किसी एक को ही ग्रहण किया जाता है।

सुख–दुःख	सुख या दुःख
आज – कल	आज या कल
हानि – लाभ	हानि या लाभ

गमनागमन	गमन या आगमन
गुण – दोष	गुण या दोष

6. **बहुव्रीहि समास –** इस समास में पूर्वपद व उत्तरपद दोनों ही गौण होते हैं व अन्य पद प्रधान होता है व शाब्दिक अर्थ को छोड़कर एक नया अर्थ निकलता है।

जैसे – लंबोदर – लंबा है उदर (पेट) जिसका इस शब्द में दोनों पदों का अर्थ प्रधान न होकर अन्यार्थ 'गणेश' शब्द प्रधान है।

समस्त पद	**समास विग्रह**
घनश्याम	घन जैसा श्याम अर्थात् कृष्ण
नीलकंठ	नीला कंठ है जिसका अर्थात् शिव
दशमुख	दश मुख हैं जिसके अर्थात् रावण
महावीर	महान् है जो वीर अर्थात् हनुमान
हंसवाहिनी	हंस है वाहन जिसका अर्थात् सरस्वती
वज्रपाणि	वज्र है पाणी में जिसके वह (इन्द्र)
चन्द्रमुखी	चन्द्र के समान है जिसका मुख (सुंदर स्त्री)
गजानन	गज के समान आनन वाला अर्थात् गणेश
दिंगबर	दिशा ही है अंबर जिसका अर्थात् शिव

प्रायः कुछ समासों में एक ही साथ अनेक विशेषताएँ पायी जाती हैं, ऐसी स्थिति सर्वप्रथम बहुव्रीहि समास का ही चयन करें। ज्ञात रहे यदि बहुव्रीहि समास न हो तब हम अन्य समास का चयन कर सकते हैं।

कर्मधारय व बहुव्रीहि समास में अन्तर

कर्मधारय समास में दोनों पदों में विशेषण व विशेष्य व उपमान व उपमेय का संबध होता है, लेकिन बहुव्रीहि समास में दोनो पद प्रधान न होकर कोई अन्य पद प्रधान होता है।

मृगनयन	मृग के समान नयन (कर्मधारय)
नीलकंठ	वह जिसका कंठ नीला है (शिव) – बहुब्रीहि
	बहुव्रीहि / कर्मधारय
पीताम्बर	बहुव्रीहि / कर्मधारय
पंचवटी	द्विगु / तत्पुरुष
चौमासा	बहुव्रीहि / द्वन्द्व
गजानन	बहुव्रीहि / तत्पुरुष
मनोज	बहुव्रीहि / तत्पुरुष (उपपद)
दशानन	बहुव्रीहि / द्विगु

बहुव्रीहि व द्विगु समास में अन्तर

1. **द्विगु समास –** इस समास में पहला पद संख्यावाची होता है व समस्त पद समूह का बोध प्रकट करता है।

   जैसे–

   चौराहा – चार राहों का समूह

2. **बहुव्रीहि समास** – इस समास में पहला पद संख्यावाची होता है लेकिन समस्त पद से समूह का बोध न होकर अन्य अर्थ का बोध कराता है।

   जैसे–

   चतुर्भुज – चार हैं भुजाएँ जिसके (विष्णु)

   तिरंगा – तीन हैं रंग जिसमें वह (राष्ट्रध्वज)

समस्त पद	**विग्रह**
प्रधानमंत्री	मंत्रियों मे प्रधान है जो
निर्भय	जो व्यक्ति किसी से भय नहीं खाता हो
अनन्त	अन्त नही जिसका
चक्रधर	चक्र को धारण करने वाला (विष्णु)
अनहोनी	न होने वाली घटना
चंद्रमौली	चंद्र है मौलि पर जिसके (शिव)
सुहासिनी	सुंदर है हंसी जिसकी वह (भारतमाता)
सुकेशी	सुदंर केश (किरणें) हैं जिसकी (चाँद)
कुरूप	असुन्दर रूप वाला
मीनाक्षी	मीन के समान हैं अक्षि जिसका (सुंदर स्त्री)
चन्द्रशेखर	शेखर पर चन्द्र है जिसके (शिवजी)
खगेश	खगों का ईश (गरूड़)
जितेंद्रिय	जीती हैं जिसने इंद्रियाँ (कामना रहित)
अल्पबुद्धि	अल्प है बुद्धि जिसकी (व्यक्ति विशेष)
पीताम्बर	पीत अम्बर (वस्त्र) वाला (श्री कृष्ण)
पतझड़	झड़ते हैं पत्ते जिसमें (ऋतु विशेष)

षडानन	षड (छः) है आनन (मुख) जिसके (कार्तिकेय)
बहुमान	वह व्यक्ति जिसका बहुत मान हो
निरभिमान	वह व्यक्ति जिसमें अभिमान न हो
निर्लेप	किसी वस्तु या विषय में आसक्त न होने वाला विशेष
मयूरवाहन	मयूर की सवारी है जिसकी (कार्तिकेय)
निराधार	वह व्यक्ति जिसे कोई सहारा प्राप्त न हो।
पंकज	पंक में पैदा हो जो (कमल)
निर्भ्रम	जिस व्यक्ति के/ में कोई भ्रम न हो।
कलमुँहा	काला है मुँह जिसका (लांछित व्यक्ति)
आनाकानी	ना करना – टालमटोल करना।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

क्रिया

- **वाक्य में जिस शब्द या शब्द-समूह से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते है, जैसे – खाना, पीना, पढना, सोना, जाना ।**
- क्रिया का अर्थ हैं करना। क्रिया के बिना कोई वाक्य पूर्ण नहीं होता हैं। किसी वाक्य में कर्ता, कर्म तथा काल की जानकारी भी क्रिया पद के माध्यम से होती हैं। हिंदी भाषा की जननी संस्कृत हैं तथा संस्कृत में क्रिया रूप को 'धातु' कहते हैं।
  - धातु – हिंदी क्रिया पदो का मूल रूप ही 'धातु' है।
  - धातु में 'ना' जोड़ने से हिंदी के क्रिया पद बनते है।

    जैसे – पढ़ + ना = पढ़ना, उठ + ना = उठना।
  - **मोहन खाना खा रहा है ।**
  - **हवा बह रही है । (करना-हवा बहने की क्रिया कर रही है ।)**
  - **पुस्तक अलमारी में है । (होना)**

उपर्युक्त वाक्यों मे 'खा रहा है' 'बह रही है' क्रियापद है ।

क्रिया के भेद

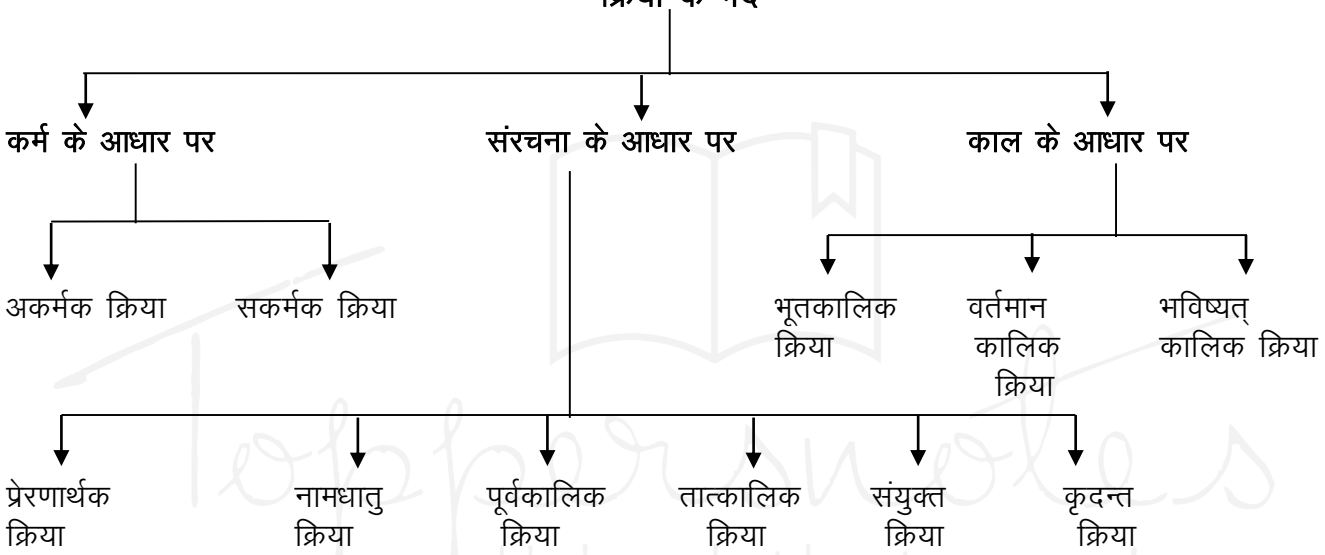

<u>वाक्य मे कर्म की संभावना के आधार पर भेद</u>

<u>अकर्मक और सकर्मक क्रिया</u> – किसी क्रिया के करने हेतु कर्म की आवश्यकता/संभावना होने या न होने के आधार पर क्रिया के मुख्यतः दो भेद है – सकर्मक और अकर्मक ।

(क) <u>अकर्मक क्रिया</u>

जिस वाक्य मे क्रिया का फल कर्म पर न पडकर केवल कर्ता पर ही पडता है अर्थात् जिस क्रिया के करने मे कर्म की आवश्यकता ही नही होती है, बिना किसी कर्म के क्रिया सम्पन्न हो सकती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते है, जैसे –

- रमा सोती है ।
- नरेश दौड रहा है ।
- चिडिया उड रही है ।
- बच्चा रोता है ।

उपर्युक्त वाक्यों मे 'सोती है', 'दौड रहा है', 'उड रही है', 'रोता है' क्रियाओं के फल का प्रभाव क्रमशः रमा, नरेश, चिडिया और बच्चा कर्ता-पदों पर ही पडता है और ये क्रियाएँ बिना किसी कर्म के केवल कर्ता के द्वारा ही सम्पन्न हो सकती है ।

अकर्मक क्रिया को भी पुनः दो भेदों में बाँट दिया जाता हैं।

(i) अपूर्ण अकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ किसी कर्म की तो आवश्यकता नहीं होती पर किसी पूरक शब्द की आवश्यकता होती हैं। वह अपूर्ण अकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

नोट – लगना, होना, निकलना ये अपूर्ण अकर्मक क्रिया को प्रदर्शित करने वाली क्रियाएँ हैं।

जैसे –

- भेड़ प्यासी थी। ┐
- मैं एक छात्र हूँ। ┘ होना

- वह बड़ा ईमानदार निकला। ┐
- वह डरावना लगता हैं। ┘ लगना, निकलना

(ii) पूर्ण अकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ कर्म व पूरक शब्द दोनों की आवश्यकता न हो, वह पूर्ण अकर्मक क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

- कोयल कूक रही हैं।
- बच्चा रो रहा हैं।
- तोता आसमान में उड़ता हैं।

नोट – पूर्ण अकर्मक क्रिया में क्या शब्द से प्रश्न किए जाने पर कोई भी काल्पनिक उत्तर नहीं निकलता हैं।

(ख) सकर्मक क्रिया

जहाँ क्रिया के घटित होने की प्रक्रिया मे कर्म की आवश्यकता होती ही है, उसे सकर्मक क्रिया कहते है । सकर्मक क्रिया कर्म के बिना सम्पन्न हो ही नही सकती, जैसे –

1. **राम पत्र लिखता है ।**
2. **लडके ने बेर खाए ।**
3. **मोहित पानी पीता है ।**
4. **अध्यापक प्रश्न पूछते है ।**

उपर्युक्त वाक्यों मे 'लिखना', 'खाना', 'पीना', 'पूछना' क्रियाओं का प्रभाव क्रमशः पत्र, बेर, पानी व प्रश्न कर्मपदों पर पड रहा है, क्योंकि इनके बिना क्रिया पूर्ण हो ही नहीं सकती, अतः ये सकर्मक क्रियाएँ है । सकर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया से पहले 'क्या', 'किसको' लगाकर प्रश्न पूछा जाता है और उसका कोई-न-कोई उत्तर अवश्य आता है और वह उत्तर ही कर्म होता है, और वह क्रिया सकर्मक होती है, राम क्या लिखता है ? (पत्र), लडके ने क्या खाए ? (बेर), मोहित ने क्या पिया ? (पानी) ।

(i) अपूर्ण सकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ कर्म के अलावा भी किसी पूरक शब्द की आवश्यकता बनी रहती हैं, तो वहाँ अपूर्ण सकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

जैसे –

- हमने उसे सरपंच **बनाया**।
- मैं उसे बहिन **मानता हूँ**।
- हम उसे ईमानदार **समझते हैं**।

पहचान – अपूर्ण सकर्मक क्रिया की श्रेणी में चयन (बनाना), चुनना, मानना, समझना आदि क्रियाएँ वाक्य के अन्त में प्रयुक्त होती हैं।

(ii) पूर्ण सकर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ केवल कर्म की ही आवश्यकता पड़ती हैं, अन्य किसी पूरक शब्द की नहीं, वहाँ पूर्ण सकर्मक क्रिया होती हैं।

जैसे –

- बच्चा खेल रहा हैं। (क्रिकेट)
- तुमने जीता। (मैच)
- तुमने रोका। (रास्ता)

पहचान – वाक्य में प्रयुक्त किसी क्रिया वाचक शब्द से पहले **क्या** शब्द से प्रश्न करने पर यदि उसका कोई काल्पनिक उत्तर प्राप्त हो जाता हैं, तो वहाँ प्रयुक्त क्रिया पूर्ण सकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

पूर्ण सकर्मक क्रिया के पुनः दो उपभेद कर दिये जाते हैं।

(i) एक कर्मक क्रिया
(ii) द्वि कर्मक क्रिया

(i) एक कर्मक क्रिया –

जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त हो, उसे एक कर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे – 'माँ पढ़ रही हैं।' (यहाँ माँ के द्वारा एक ही कर्म पढ़ना हो रहा हैं।)

- उसने सेब व संतरे खरीदे। ┐
- मैनें गाड़ी खरीदी। ┘ कर्म खरीदना

पहचान – यदि किसी वाक्य में केवल क्या प्रश्न का ही उत्तर प्राप्त हो रहा हो, तो वहाँ प्रयुक्त क्रिया एक कर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

क्रिया की पूर्णता के आधार पर भेद

अपूर्ण क्रिया –

कुछ क्रियाओं का अपने-आप में अर्थ पूर्ण ही नही होता, इसलिए अर्थ पूर्ण करने के लिए किसी अन्य 'पूरक' शब्द पर निर्भर होना होता है जो क्रिया न होकर संज्ञा या विशेषण पद होता है, ऐसी क्रियाओं को अपूर्ण क्रिया कहते है, अर्थात् क्रिया अपना अर्थ स्वयं न देकर संज्ञा, विशेषण पद से ही दे पाती है, जैसे–

- अजीत श्याम को मूर्ख समझता है । ('मूर्ख'– विशेषण के बिना क्रिया 'समझता है' का अर्थ स्पष्ट नही होगा ।)
- अशोक जी हमारे गुरु थे । (गुरु–संज्ञापद के बिना 'थे' का अर्थ स्पष्ट नही होता ।)

स्पष्ट है कि इन वाक्यों मे प्रयुक्त पूरक (मूर्ख, गुरु–दोनो संज्ञापद) का लोप कर देने से वाक्य मे पूर्णता नही आती । ऐसे पूरक कर्मपूरक कहे जाते है, जो विशेषण और संज्ञा दोनो ही हो सकते है ।

पूर्ण क्रिया –

जिस क्रिया-पद से क्रिया का अर्थ स्पष्ट हो जाए, पूरक के रूप मे गैर-क्रियापद (संज्ञा-विशेषण) की आवश्यकता नही हो, उसे पूर्ण क्रिया कहते है, जैसे–

1. लडका सोता है ।
2. लडका पढता है ।

यहाँ 'सोता है', 'पढता है' क्रियापद से पूर्ण अर्थ निकल जाता है । ये दोनो पद क्रियापद ही है । अतः ये पूर्ण क्रियाएँ है ।

(ii) द्वि कर्मक क्रिया –

जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म प्रयुक्त हो, उसे द्वि कर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे – अध्यापक छात्रों को कम्प्यूटर सिखा रहे हैं।

क्या सिखा रहें हैं ? – कम्प्यूटर, किसे सिखा रहे हैं ? (छात्रों को) (छात्र सीख रहे हैं) इस प्रकार दो कर्म एक साथ घटित हो रहे हैं।

- सुमन अपनी बहन को हिंदी सिखाती हैं।
- अध्यापक ने छात्रों को हिंदी पढ़ाई।

पहचान – जब किसी वाक्य में किसे, क्या, किसको इन सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हो रहें हो, तो वहाँ प्रयुक्त किया द्विकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

- द्विकर्मक क्रिया में प्रथम कर्म अप्राणीवाचक (निर्जीव) तथा द्वितीय कर्म प्राणीवाचक (सजीव) होगा।

ध्यान देने योग्य बातें – हिंदी में निम्न **सोलह क्रियाएँ** ऐसी क्रियाएँ हैं, जिनके साथ दोनों कर्म प्रयुक्त किये जाते हैं। अतः इन्हें नित्य द्विकर्मक क्रिया माना जाता हैं।

1.	दुहना	2.	माँगना
3.	पकाना	4.	सजा देना
5.	रोकना	6.	पूँछना
7.	चुनना	8.	कहना
9.	उपदेश देना	10.	जीतना
11.	मथना	12.	चुराना
13.	ले जाना	14.	हरण करना
15.	खिंचना	16.	ढ़ोना

क्रिया की संरचना के आधार पर भेद

प्रेरणार्थक क्रिया –

जहाँ कर्ता खुद क्रिया को न करके दूसरे को क्रिया करने की प्रेरणा देता है वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है । यहाँ कर्ता भी क्रिया तो करता है किन्तु वह प्रेरणा देने की क्रिया करता है । प्रेरणार्थक क्रियाओं मे 'वा' लगता है ।

सरपंच ने गाँव में तालाब बनवाया।

नोट – इसमें सरपंच ने स्वयं कार्य नहीं किया, बल्कि अन्य लोगों को प्रेरित कर उनसे तालाब का निर्माण करवाया, अतः यहाँ प्रेरणार्थक किया हैं।

- नरेश ने नाई से बाल कटवाए ।
- सुनीता ने अर्चना से पत्र लिखवाया ।
- मोहन ने माली से दूब कटवाई ।

सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक होती है ।

मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया –

मुख्य क्रिया के अर्थ को पूरा करने मे सहायता करने वाला क्रियापद सहायक क्रिया कहलाता है, जैसे –

- मैं गया हुआ था । (यहाँ गया मुख्य क्रिया है तथा हुआ था सहायक क्रिया है ।)
- सुरेश सुन रहा था । (सुन– मुख्य क्रिया है तथा रहा था– सहायक क्रियाएँ)

नामधातु क्रिया –

जब संज्ञा एवं विशेषण अर्थात् नामपद शब्दों के अंत मे प्रत्यय जोडने पर किसी क्रिया का निर्माण होता है, तब वह नामधातु क्रिया होती है । जैसे –

- सेठ ने मकान हथियाया । (हाथ–संज्ञापद)
- मुझ पर दृश्य फिल्माया । (फिल्म–संज्ञापद)
- लडकी बतियाई । (बात संज्ञापद)

हाथ (संज्ञा) – हथिया (नाम धातु) हथियाना (क्रिया)
अपना (सर्वनाम) – अपना (नाम धातु) अपनाना (क्रिया)
जैसे – रोहित, सुनीता के विवाह की जिम्मेदारी को अपना चुका हैं।

संज्ञा से निर्मित नाम धातु		सर्वनाम से निर्मित नामधातु	
हाथ	– हथियाना	अपना	– अपनाना
लाज	– लज्जाना	**विशेषण से निर्मित नाम धातु**	
बात	– बतियाना	ठण्डा	– ठण्डाना
लात	– लतियाना	साठ	– सठियाना
रंग	– रंगना	गर्म	– गर्माना
शर्म	– शर्माना		

पूर्वकालिक क्रिया –

जब कर्ता एक कार्य समाप्त कर उसी पल दूसरा कार्य आरम्भ करता है, तब पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है । पूर्वकालिक क्रिया के अंत मे कर लगता है– सोकर, उठकर, जाकर आदि ।

- बच्चे दूध पीकर सो गए ।
  (सोने से पहले दूध पीया ।)
- रमेश खाना खाकर विद्यालय गया ।
- रमेश खाना खाने के बाद विद्यालय गया ।

लेकिन 'रमेश ने खाना खाया और उसके बाद विद्यालय गया' वाक्य मे पहली क्रिया पूर्वकालिक नही है, बल्कि दोनो ही क्रियाएँ स्वतंत्र क्रियाएँ है क्योकि दोनो क्रियाएँ दो अलग–अलग उपवाक्यों की क्रियाएँ है ।

तात्कालिक क्रिया –

यह क्रिया भी मुख्य क्रिया से पहले सम्पन्न हो जाती है । इसमें और मुख्य क्रिया में समय का अंतर नही होता, किन्तु पहली क्रिया के घटने के तत्काल बाद दूसरी क्रिया के घटने का बोध होता है जो 'ही' निपात से संभव होता है ।

- वह खाना खाते ही (तात्कालिक क्रिया) सो गया ।
- वह नहाते ही (तात्कालिक क्रिया) मंदिर चला गया ।

संयुक्त क्रिया –

जब दो या दो से अधिक क्रिया–धातुओं के योग से क्रियापद बनता है तो उसे संयुक्त क्रिया कहते है । संयुक्त क्रिया मे कई क्रियाओं के संयुक्त हो जाने से एक क्रिया का अर्थ निकलता है, जैसे –

- वह खाना खा चुका होगा ।
- दीक्षा लिखा करती होगी ।
- पानी बरसने लगा है ।
- मैं यहाँ रोज आ जाया करता हूँ ।
- दोपहर में लोग सो रहे होते है ।

इन सभी वाक्यों में पहला क्रियापद मुख्य क्रिया है तथा बाद के सभी क्रियापद सहायक क्रियाएँ है और मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रियाओं को मिलकर बने क्रियापद–समूह संयुक्त क्रियाएँ है । सहायक क्रिया एक भी हो सकती है । (पढता है) और एक से अधिक भी जैसा कि ऊपर के वाक्यों में है ।

कृदन्त क्रिया – क्रिया शब्दों में जुड़ने वाले प्रत्यय 'कृत' प्रत्यय कहलाते हैं तथा कृत प्रत्यय के योग से बने शब्द कृदन्त कहलाते हैं। क्रिया शब्दों के अन्त में प्रत्यय योग से बनी क्रिया कृदन्त क्रिया कहलाती हैं।

क्रिया		**कृदन्त क्रिया**
लिख	–	लिखना, लिखता, लिखकर
चल	–	चलना, चलता, चलकर

विशेष

(1) यदि किसी वाक्य में प्रयुक्त कोई क्रिया स्वत घटित हो रही हो तो वहाँ उस क्रिया को अकर्मक क्रिया माना जाता है –
जैसे – पेड से पत्ता गिर रहा है ।
बूंद-बूंद से घडा भरता है ।

(2) यदि किसी वाक्य में गत्यार्थक क्रिया का (आना, जाना, चलना) का प्रयोग हो रहा है एवं उसके साथ वाक्य में आने/जाने/चलने का स्थानवाचक शब्द भी लिखा हो तो वहाँ इन क्रियाओं का सकर्मक माना जाता है ।
जैसे – बच्चा घर गया ।
वह स्कूल आ रही है ।

काल के आधार पर क्रिया

जिस काल के अनुसार क्रिया सम्पन्न होती हैं, उसके अनुसार क्रिया के **तीन भेद** हैं।

1. भूतकालिक क्रिया
2. वर्तमान कालिक क्रिया
3. भविष्यत् कालिक क्रिया

1. **भूतकालिक क्रिया** – क्रिया का वह रूप जिससे बीते समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता हैं, भूतकालिक क्रिया कहलाती हैं।
जैसे –
- वह विद्यालय चला गया।
- उसने बहुत सुंदर गीत गाया।

2. **वर्तमान कालिक क्रिया** – क्रिया का वह रूप जिसमें वर्तमान समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता हैं, वर्तमान कालिक क्रिया कहलाती हैं।
जैसे –
- अनुष्का अखबार पढ़ रही हैं।
- अनिल हॉकी खेल रहा हैं।
- सुमित खाना खा रहा हैं।

3. **भविष्यत् कालिक क्रिया** – क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा आने वाले समय में कार्य सम्पन्न होने का बोध होता हैं, उसे भविष्यत् कालिक क्रिया कहते हैं।
जैसे –
- रेखा द्वितीय श्रेणी अध्यापक परीक्षा की तैयारी करेगी।
- हरीश दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेगा।
- कविता सर्दी की छुट्टियों में ननिहाल जाएगी।

अन्य क्रियाएँ

1. **सामान्य क्रिया** – जब किसी वाक्य में एक ही धातु से बनी हुई किसी अकेले क्रिया का प्रयोग हो रहा हो, तो वहाँ वह सामान्य क्रिया कहलाती हैं।
जैसे –
- राकेश दिल्ली गया।
- सुमन खाना बनाएगी।
- रेखा ने गीत गाया।

2. **सजातीय क्रियाएँ** – जिस क्रिया के साथ उससे बनी हुई भाववाचक संज्ञा का कर्म के रूप में प्रयोग होता हैं, उसे सजातीय क्रिया कहते हैं।
अर्थात् – जब किसी वाक्य में कर्म एवं क्रिया पद दोनों एक ही धातु के बने होते हैं, वहाँ प्रयुक्त क्रिया सजातीय क्रिया कहलाती हैं।
जैसे –
- राजू कई **खेल–खेलता हैं।**
- सीता मधुर **हँसी–हँसती** हैं।
- कृष्ण अच्छी **चाल–चलता** हैं।

3. **अनुकरणात्मक क्रिया** – किसी ध्वनि (आवाज/बोली) के अनुकरण पर जो क्रिया बनती हैं, उसे अनुकरणात्मक क्रिया कहते हैं।
जैसे –
- बकरी की आवाज – में – में से मिमियाना
- तोते की आवाज – टें – टें से टिटियाना
- हवा की आवाज – सन – सन से सनसनाना

पक्षियों की आवाजें

कूकना (कू–कू)	–	कोयल
रँभाना	–	गाय
कुकडूँ–कुकडूँ	–	मुर्गा
डकारना	–	साँड
गुटरगूँ	–	कबूतर

खोखियाना	–	भालू
काँव–काँव	–	कौआ
हिनहिनाना	–	घोड़ा
भिन्न–भिन्नाना	–	मक्खी
भौंकना	–	कुत्ता
झंकरना (झीं–झीं)	–	झींगुर
दहाड़ना	–	शेर
गुनगुनाना	–	भंवरा
चिंघाड़ना	–	हाथी
भनभनाना	–	मच्छर
बलबलाना	–	ऊँट

क्रिया के संबंध में वाच्य

वाच्य – वाच्य क्रिया का रूपांतरण हैं, जिसके द्वारा यह पता चलता हैं कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता हैं।

वाच्य के भेद – वाच्य के **तीन भेद** होते हैं।

1. कर्तृवाच्य
2. कर्मवाच्य
3. भाववाच्य

1. **कर्तृवाच्य** – जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध होता हैं, वह कर्तृवाच्य कहलाता हैं।
   जैसे –
   - राम ने खाना खाया।
   - वह शहर गया।
   - रमा हँसती हैं।

   नोट – कर्तृवाच्य सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाओं से बनता हैं।

2. **कर्मवाच्य** – वह वाच्य जिसमें कर्म की प्रधानता का बोध हो, कर्मवाच्य कहलाता हैं।
   जैसे –
   - गाना गाया गया।
   - पेड़ काटा गया।
   - पुस्तक लिखी गई।

   नोट – कर्मवाच्य सकर्मक क्रिया से बनता हैं।

3. **भाववाच्य** – जिस वाक्य में भाव या क्रिया की प्रधानता हो, वह भाववाच्य कहलाता हैं।
   जैसे –
   - सुरेश से चला नहीं जाता।
   - मुझसे दौड़ा नहीं जाता।
   - कमला से हँसा नहीं जाता।

   नोट – भाववाच्य अकर्मक क्रिया से बनता हैं।

वाच्य के प्रयोग

वाक्य में क्रिया द्वारा कर्ता, कर्म, भाव का अनुसरण करने के कारण, वाच्य प्रयोग को **तीन भागों** में बाँटा गया हैं –

1. कर्तरि प्रयोग
2. कर्मणी प्रयोग
3. भावे प्रयोग

1. **कर्तरि प्रयोग** – जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हों, तब कर्तरि प्रयोग होता हैं।
   जैसे –
   - राम आम खाता हैं।
   - श्याम अखबार पढ़ता हैं।

2. **कर्मणी प्रयोग** – जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हो, तब कर्मणी प्रयोग होता हैं।
   जैसे –
   - विमला ने किताब पढ़ी।
   - मुकेश ने गीत गाया।
   - लड़की द्वारा पत्र को पढ़ा गया।

3. **भावे प्रयोग** – जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार न होकर सदैव पुल्लिंग, एकवचन, अन्यपुरुष में हो, तब भावे प्रयोग होता हैं।
   जैसे –
   - कमल से दौड़ा नहीं जाता।
   - सोनू से हँसा नहीं जाता।
   - मुझसे रोया नहीं जाता।
   - पक्षियों से उड़ा नहीं जाता।

क्रिया की वृत्ति

वृत्ति का शाब्दिक अर्थ – मनःस्थिति या मूड

क्रिया के जिस रूप द्वारा लेखक या वक्ता के उद्देश्य/मंतव्य, मनःस्थिति का पता चलता हैं, वह क्रिया वृत्ति कहलाता हैं।

वृत्ति के भेद – (7)

(i) संदेहार्थक वृत्ति

संदेहार्थक वृत्ति – क्रिया के जिस रूप से लेखक के मन में उत्पन्न होने वाले संदेह/शंका का भाव प्रकट होता हैं, तो वह संदेहार्थक वृत्ति कहलाती हैं।

जैसे –

- संतोष गाँव पहुँच गई होगी।
- भावेश पत्र लिख रहा होगा।
- रमेश ने खाना खा लिया होगा।

(ii) संभावनार्थक वृत्ति

संभावनार्थक वृत्ति – जिस वृत्ति से किसी क्रिया के भविष्य में हो सकने के बारे में पता चलता हैं, उसे संभावनार्थक वृत्ति कहते हैं।

जैसे –

- आप अच्छे वक्ता बन सकते हों।
- शायद कल बारिश आए।
- भारत–पाकिस्तान के बीच होने वाला क्रिकेट मैच रुक सकता हैं।
- पिताजी शाम को यहाँ आ सकते हैं।

(iii) आज्ञार्थक वृत्ति

आज्ञार्थक वृत्ति – यदि किसी वाक्य में आज्ञा/आदेश/आदेश, अनुरोध, निषेध, चेतावनी, प्रार्थना आदि का बोध हो, वह आज्ञार्थक वृत्ति कहलाता हैं।

जैसे –

- अजय तुम यहाँ से चले जाओ। (आज्ञा)
- रेखा इधर आओ। (आदेश)
- मेरा काम जरूर कर दीजिएगा। (अनुरोध)
- आप मुझे अपनी पुस्तक दे सकेंगे। (निवेदन)
- तुम जल्दी चले जाना नहीं तो गाड़ी निकल जाएगी। (चेतावनी)

(iv) संकेतार्थक वृत्ति

संकेतार्थक वृत्ति – यदि किसी वाक्य में संकेत के भाव प्रकट हो, तो वहाँ संकेतार्थक वृत्ति होगी।

जैसे –

- बारिश होगी तो हम भी पिकनिक पर चलेंगे।
- यदि तुम पढ़ते तो पास हो जाते।
- छुट्टी होती तो हम गाँव चले जाते।

(v) निश्चयार्थक वृत्ति

निश्चयार्थक वृत्ति – निश्चयार्थ वृत्ति में वक्ता की निश्चित भाव की मानसिक अभिवृत्ति का पता चलता हैं।

जैसे –

- मेरे पिताजी बहुत मेहनती हैं।
- उसने अपना कार्य कर लिया हैं।
- अब गाड़ी जा चुकी हैं।
- सोहन अच्छा वक्ता हैं।

(vi) इच्छार्थक वृत्ति

इच्छार्थक वृत्ति – इस वृत्ति में वक्ता की इच्छा, वरदान, अभिशाप आदि का पता चलता हैं।

जैसे –

- आपकी यात्रा मंगलमय हो।
- बेटे जल्दी ही तुम्हारी नौकरी लग जाए।
- भगवान तुम्हें नरक में डाले।
- भगवान सबका भला करे।

(vii) प्रश्नार्थक वृत्ति

प्रश्नार्थक वृत्ति – जब वक्ता के मन में जिज्ञासा हो और वह उसको शांत करने के लिए प्रश्न करें तो वह प्रश्नार्थक वृत्ति कहलाती हैं।

जैसे –

- यह किताब कितने दिन में बन जायेगी।
- अब मुझे किस परीक्षा की तैयारी करनी चाहिए।
- आपका जन्मदिन कब हैं ?
- आपका नाम क्या हैं ?

क्रिया के पक्ष

पक्ष – हर कार्य किसी कालावधि के बीच होता हैं, जो आरंभ से लेकर अन्त तक फैला हुआ होता हैं। इस क्रिया में क्रिया के घटित होने के विभिन्न पहलुओं, प्रतिक्रियाओं को देखना पक्ष कहलाता हैं। क्रिया के जिस रूप से क्रिया के होने की प्रक्रियागत अवस्था का बोध होता हैं, वह पक्ष कहलाता हैं।

पक्ष के भेद – पक्ष के मुख्यत 6 भेद होते हैं।

पक्ष के भेद

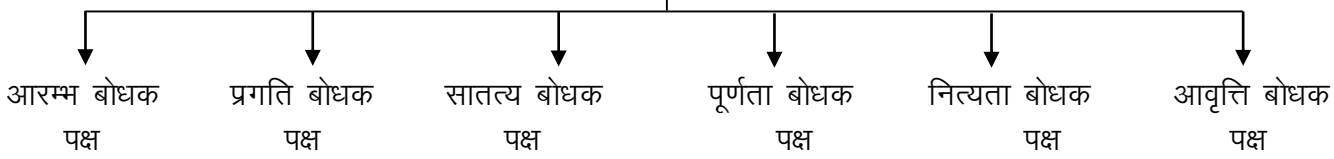

1. **आरम्भ बोधक पक्ष** – क्रिया का वह रूप जिससे किसी कार्य के आरम्भ होनें का बोध हों, वह आरम्भबोधक पक्ष कहलाता हैं।
   जैसे –
   - अतुल स्कूल जाने लगा हैं।
   - आजकल अवनी भी पढ़ने लगी हैं।
   - नवीन बोलने लगा हैं।
   - साक्षी पुस्तक पढ़ने लगी हैं।

2. **प्रगति बोधक पक्ष** – यदि किसी वाक्य में प्रयुक्त क्रिया में बढ़ोतरी या वृद्धि होने का भाव प्रकट हो तो वहाँ प्रगति बोधक पक्ष माना जाता हैं।
   जैसे –
   - रीतिका पुस्तक पढ़ती ही जा रही थी।
   - मेलें में भीड़ बढ़ती ही जा रही थी।
   - वर्षा होती ही जा रही थी।

3. **सातत्य बोधक पक्ष** – क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के निरंतर रूप से चलते रहने का संकेत मिलता हैं। यह निरंतरता वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत् काल किसी में हो सकती हैं।
   जैसे –
   - शिक्षक कक्षा में पढ़ा रहे थे।
   - श्याम पुस्तक पढ़ रहा हैं।
   - मानसी लिख रही हैं।

4. **पूर्णता बोधक पक्ष** – क्रिया के जिस रूप द्वारा कार्य के पूर्ण हो जाने का बोध हो, वहाँ पूर्णता बोधक पक्ष माना हैं।
   जैसे –
   - स्नेहा स्नान कर चुकी हैं।
   - गाड़ी जा चुकी हैं।
   - निराला ने पुस्तक पढ़ ली हैं।

5. **नित्यता बोधक पक्ष** – क्रिया के जिस रूप द्वारा किसी कार्य के नित्य होने का बोध होता हैं, वहाँ नित्यता बोधक पक्ष माना जाता हैं। क्रिया पहले भी होती थी, अभी भी होती हैं और आगे भी होती रहेगा। **नित्यता बोधक पक्ष को अपूर्णता बोधक पक्ष भी कहा जाता हैं।**
   जैसे –
   - मेरे पिताजी किसान हैं।
   - सूर्य पूर्व दिशा से उदय होता हैं।
   - सूर्यास्त के समय आसमान में लालिमा छा जाती हैं।

6. **आवृत्ति बोधक पक्ष** – जब किसी वाक्य में एक ही कार्य के बार–बार घटित होनें का बोध होता हैं तो वहाँ आवृत्ति बोधक पक्ष माना जाता हैं।
   जैसे –
   - डाकिया पत्रों का वितरण करता हैं।
   - आरती स्कूल जाती हैं। (रोजाना)
   - होली पर सब लोग घरों की सफाई करते हैं। (हर बार)

   नोट – आवृत्ति बोधक पक्ष को अभ्यास बोधक पक्ष भी कहा जाता हैं।